संपादक का पत्र

प्रभु की स्तुति हो! यह 'फसल' का महीना है, और मैं हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह से प्रार्थना करती हूं कि आप में से प्रत्येक के जीवन में बहुतायत से 'आत्मारिक फसल' हो।

इब्रानियों 11:25–26 ''इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दु:ख भोगना अधिक उत्तम लगा। उसने मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा, क्योंकि उसकी आँखें फल पाने की ओर लगी थीं।''

फिरौन का महल अकल्पनीय राजसी वैभव से भरा हुआ था और मूसा ने अपने जीवन के ज्यादातर समय इसी महल में शान शौकत से जीवन व्यतीत किया। लेकिन धीरे–धीरे, मूसा के जीवन में एक ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई जिसमें उसे फिरौन के महल में एक समृद्ध जीवन और प्रभु के लोगों के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करने के संघर्ष के बीच चुनाव करना पड़ा! मूसा के सामने एक चुनाव था, और उसने फैसला किया कि वह महल में रहने की शान शौकत का आनंद लेने के बजाय अपने लोगों के साथ प्रभु के लिए कष्ट सहना पसंद करेगा। फिरौन के महल में मूसा को किसी चीज़ की कमी नहीं थी, लेकिन जब उसे सच्चाई का पता चला, तो उसे एहसास हुआ कि इस दुनिया की सारी दौलत नष्ट हो जाएगी, और केवल प्रभु और उनका प्यार ही स्थायी रहेगा।

इसी तरह, हमारे संबंधित जीवन में, यीशु के साथ हमारी आत्मारिक यात्रा के दौरान, हमारे विश्वास की प्रतिदिन परीक्षा होगी। हममें से प्रत्येक को इस संसार की खुशियों और समृद्धि या प्रभु और उनके लोगों के बीच चुनाव करने की स्थिति का सामना करना पड़ेगा। उस समय लूत को स्मरण रखना, और बुद्धिमानी से चुनाव करना। लूत ने सदोम और अमोरा शहर को चुना क्योंकि उसने अपनी शारीरिक आँखों से देखा था कि यह इतना हरा–भरा और फलदायी था, उसे इस बात का एहसास नहीं था कि यह एक ऐसा शहर था जिसे प्रभु नष्ट करने की योजना बना रहे थे। हममें से बहुत से लोग अपने वर्तमान में इतने डूबे हुए हैं कि हम भविष्य को अपनी शारीरिक आँखों से नहीं देख पाते हैं। जब हम ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं, तो हमें

हमेशा याद रखना चाहिए कि हम प्रभु के अधीन, उनके चुने हुए लोगों के मार्गदर्शन के साथ बुद्धिमानी से चुनाव करें। प्रकाशितवाक्य 2:10 ''जो दुःख तुझ को झेलने होंगे, उन से मत डर। क्योंकि देखो, शैतान तुम में से कुछ को जेलखाने में डालने पर है ताकि तुम परखे जाओ; और तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा। प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा।'' दुनिया की खुशियाँ एक अंतिम तारिक के साथ आती हैं, लेकिन प्रभु और उनकी उपस्थिति के साथ खुशियों की कोई सीमा नहीं है, और सबसे अच्छी बात यह है कि यह केवल हमारे सांसारिक जीवन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि हमारे अनन्त जीवन तक भी सीमित है।

जैसा कि शास्त्र कहता हैं, यीशु ने यरूशलेम की ओर देखा और रोये। इसी तरह, प्रभु हमारे कई दिलों और दिमागों को देखते हैं और हमारी अज्ञानता पर रो रहे हैं, क्योंकि वह भविष्य जानते हैं। याकूब 1:8,7 ''वह व्यक्ति दुचित्ता है और अपनी सारी बातों में चंचल है। ऐसा मनुष्य यह न समझे कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा,'' हमें अपने जीवन में कभी भी वस्तुगत लाभ की तलाश नहीं करनी चाहिए, ऐसा न हो कि हम अपना आत्मारिक आशीष खो दें। हमें हमेशा, अपने पूरे दिल और दिमाग से, **चाहे परिस्थितियाँ कुछ भी हों, परमेश्वर का अनुसरण करने का प्रयास करना चाहिए।**

इसलिए, प्रभु के प्रिय बच्चों, जब भी आप जीवन के चौराहे पर हों, आपको दुनिया की दौलत या प्रभु और उनके लोगों के बीच चुनाव करना हो, तो हमेशा प्रभु और उनके लोगों के साथ रहना चुनें, क्योंकि केवल यही हमारे जीवन को समृद्ध करेगा; जीवन में बाकी सब कुछ नष्ट हो जाएगा। जैसा कि शास्त्र कहता है मत्ती 24:13 में ''परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।''

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

2 तीमुथियुस 4:5 ''पर तू सब बातों में सावधान रह, दुःख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर, और अपनी सेवा को पूरा कर।'' प्रभु जिन्हें प्यार करते है उन्हें विशेष योग्यता देते है और उन्हें अपनी सेवा के लिए चुनते है। इस दुनिया में, किसी भी कंपनी में भर्ती होने से पहले हमें एक इंटरव्यू का सामना करना पड़ता है, जिसके बाद हमारा चुनाव होता है। फिर हमें कंपनी की नीतियां बताई जाती हैं जिनका हमें पालन करना होगा और अंत में एक प्रस्ताव पत्र दिया जाता है जिस पर हमें हस्ताक्षर करके स्वीकार करना होता है। हालाँकि, हमारे प्रभु की सेवा उस सेवा के विपरीत है जो हम इस दुनिया में करते हैं, जिसमें प्रभु पहले हमें चुनते हैं, और फिर हमें उस काम को पूरा करने के लिए योग्यता का आशीष देते हैं जिसके लिए उन्होंने हमें चुना है। हम प्रभु के लिए जो कार्य करते हैं वह हमारी बुद्धि और ज्ञान, या यहाँ तक कि हमारी योग्यताओं द्वारा भी नहीं किया जा सकता है। कलवारी के क्रूस पर, यीशु ने हमारे लिए अपनी योग्यता से हमें आशीष दिया है। यूहन्ना 15:16 ''तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें नियुक्त किया कि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे।'' हमने प्रभु को नहीं चुना है, बल्कि उन्होंने हमें चुना है। हमें यह सदैव याद रखना चाहिए कि जब प्रभु हमें अपनी सेवा के लिए चुनते है, तो वह हमें उस कार्य के योग्य भी बनाते है। वह हमारे जीवन को आशीष देते है ताकि हम फलफूल सकें और उनके नाम को महिमा कर सकें। प्रभु हमें तैयार करते

है और हममें से उन लोगों को तैयार करते है जो उनसे प्यार करते हैं और सच्चाई से उनकी सेवा करने के लिए तैयार हैं।

बाइबिल में, शाऊल ने परमेश्वर की मण्डली को नष्ट करने के लिए उनका पीछा किया। बाद में, शाऊल को प्रभु द्वारा दोषी ठहराया गया, और प्रभु ने इस धरती पर अपनी महिमा के विस्तार के लिए शाऊल का उपयोग किया। शाऊल ने पहले मसीह के विश्वासियों और अनुयायियों को नष्ट किया था और मार भी डाला था; परन्तु जब शाऊल दोषी ठहराया गया, तो परमेश्वर ने उसे अपनी महिमा के लिये उपयोग किया। उसके बाद शाऊल जो 'प्रेरित पॉल' बना, उसने नए करार में कई किताबें लिखीं और वही आज हमारे लिए 'रोशनी' बन गई है। प्रेरितों के काम 20:24 ''परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को और उस सेवा को पूरी करूँ, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।'' शाऊल ने अपनी सेवा सीधे परमेश्वर से प्राप्त की थी, अर्थात्, कलवारी के क्रूस से, अर्थात्, यीशु मसीह से, पृथ्वी पर उनकी सेवा करने के लिए। हम जानते हैं कि प्रेरित पौलुस ने किस प्रकार प्रभु के लिए कार्य किया और बाद में स्वयं दुखों का सामना किया। परमेश्वर द्वारा उसे

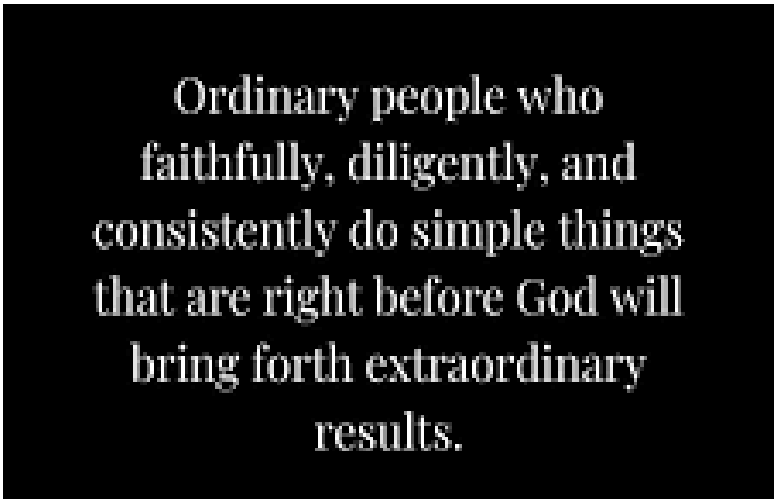

चुने जाने के बाद, जीवन में उसकी इच्छा उस काम को पूरा करने की थी जो परमेश्वर ने उसे दिया था। शाऊल ने कभी भी उस दुःख, दर्द या उत्पीड़न के बारे में नहीं सोचा था जिससे वह गुज़र रहा था। जीवन में उसकी एकमात्र इच्छा प्रभु के लिए प्रत्येक कार्य को पूरी तरह से पूरा करना था। पुराने करार में, लोग जो सेवा करते थे वह नौकर–प्रभु के रिश्ते की तरह था, लेकिन नए करार में, यह रिश्ता पूरी तरह से बदल गया है और अब पिता–बच्चे का रिश्ता है। कुलुस्सियों 4:17 ''और अर्खिप्पुस से कहना कि जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे सावधानी के साथ पूरी करना।''

वचन कहता है कि हमें प्रभु से प्राप्त सेवा को लगन से निभाना चाहिए। क्योंकि रिश्ता पिता–बच्चे जैसा होता है, इसलिए पिता की नज़र हमेशा अपने बच्चों पर रहती है। प्रभु हमेशा अपने बच्चों के द्वारा किए गए कार्यों पर नजर रखते हैं। इस दुनिया में, जब हम किसी संस्था में काम करते हैं, तो यह केवल एक सीमित समय के लिए होता है, लेकिन जब हम प्रभु के लिए काम करते हैं, तो यह हमेशा के लिए होता है। प्रभु किसी भी समय हमसे बात करना चाहते है, और जब वह हमसे बात करना चाहे तो हमें उसे सुनने के लिए तैयार रहना चाहिए। वचन कहता है, *'जो सेवा तुझे प्रभु में मिली है उस पर चौकस रहो, कि उसे पूरा करो।'* पिता सदैव अपने बच्चों पर अपनी दृष्टि रखते है। जब हम सतर्कता और लगन से प्रभु का काम कर रहे हैं, तो हमें कभी भी आशीष मांगने की आवश्यकता नहीं होगी, बल्कि आशीष हमें ढूंढते हुए आएगी। 2 राजा 4:8–10 ''एक दिन की बात है कि एलीशा शूनेम को गया, जहाँ एक कुलीन स्त्री थी, और उसने उसे रोटी खाने के लिये

विनती करके विवश किया। अतः जब जब वह उधर से जाता, तब तब वह वहाँ रोटी खाने को उतरता था। उस स्त्री ने अपने पति से कहा, "सुन यह जो बार बार हमारे यहाँ से होकर जाया करता है वह मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र भक्त जान पड़ता है। हम भीत पर एक छोटी उपरौठी कोठरी बनाएँ, और उसमें उसके लिये एक खाट, एक मेज, एक कुर्सी और एक दीवट रखें, कि जब जब वह हमारे यहाँ आए, तब तब उसी में टिका करे।'' जब हम अपने प्रभु का काम सच्चाई से करते हैं, तो वह ही हम पर आशीष बरसाते हैं। यहां हम देखते हैं कि शुनेम्मिन महिला के मन में नबी एलीशा के प्रति कितना सम्मान था। जब भी एलीशा शूनेम आता था, वह उसके घर में रुकता था। शूनेमिन स्त्री ने अपने पति से कहा कि उन्हें पवित्र भक्त एलीशा के लिये ऊपरी कमरा तैयार करना होगा। यहां एक उदाहरण दिया गया है कि कैसे एलीशा के जीवन पर आशीष की वर्षा हुई, जबकि वह सच्चाई से प्रभु के लिए काम करता रहा।

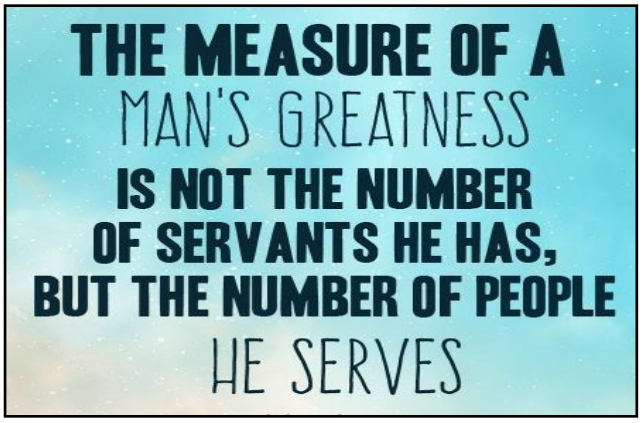

मत्ती 6:33 ''इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।'' हमें पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करनी चाहिए, फिर अपने आप से हमारी हर आवश्यकता प्रभु द्वारा प्रदान की जाएगी। हमें प्रभु की सेवा करने की आवश्यकता क्यों है? हमें सेवा करने की आवश्यकता है ताकि परमेश्वर का वचन इस पृथ्वी के अंतिम छोर तक पहुंचाया जा सके। 2 तीमुथियुस 4:5 ''पर तू सब बातों में सावधान रह, दुःख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर, और अपनी सेवा को पूरा कर।'' जब हम प्रभु परमेश्वर की सेवा करते हैं, तो वह हमें वह सब प्रदान करेंगे जो हमें चाहिए होगा। वह एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर है!

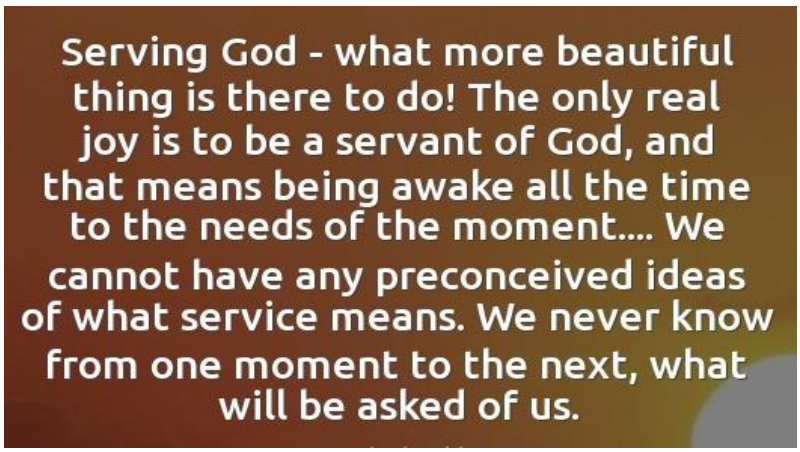

परमेश्वर ने अब्राम से कहा, उत्पत्ति 17:1 में ''जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, "मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।'' परमेश्वर ने अब्राम से निर्दोष होने और परमेश्वर के सामने पूर्णता से चलने के लिए कहा। जब हम प्रभु के लिए टेढ़े–मेढ़े होकर चलते हैं, तो हम उनकी सेवा नहीं कर सकते। हम अपनी बुद्धि और ज्ञान के अनुसार परमेश्वर के सामने नहीं चल सकते, बल्कि हमें केवल उनकी इच्छा के अनुसार चलना चाहिए। हमारा परमेश्वर एक महान परमेश्वर है, और वह हमारा सर्वशक्तिमान पिता है। 1 तीमुथियुस 6:16 ''और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी

देख सकता है। उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन।'' हमारे परमेश्वर के सामने कोई टिक नहीं सकता, जो सामर्थी और चमकती हुई ज्योति है। वही परमेश्वर इस्राएलियों के बीच उनकी स्तुति और आराधना के दौरान उतरा।

कल्पना कीजिए, हमारे बीच में कितना अद्भुत और प्रेममय परमेश्वर है! भजन संहिता 22:3 ''परन्तु तू जो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है।'' एक परमेश्वर जिसे कभी किसी ने नहीं देखा, जिसकी चमकती रोशनी के सामने हम खड़े नहीं हो सकते – यही परमेश्वर इस्राएलियों के बीच में उतरा जब भी उन्होंने उसकी स्तुति की और प्रभु की आराधना की।

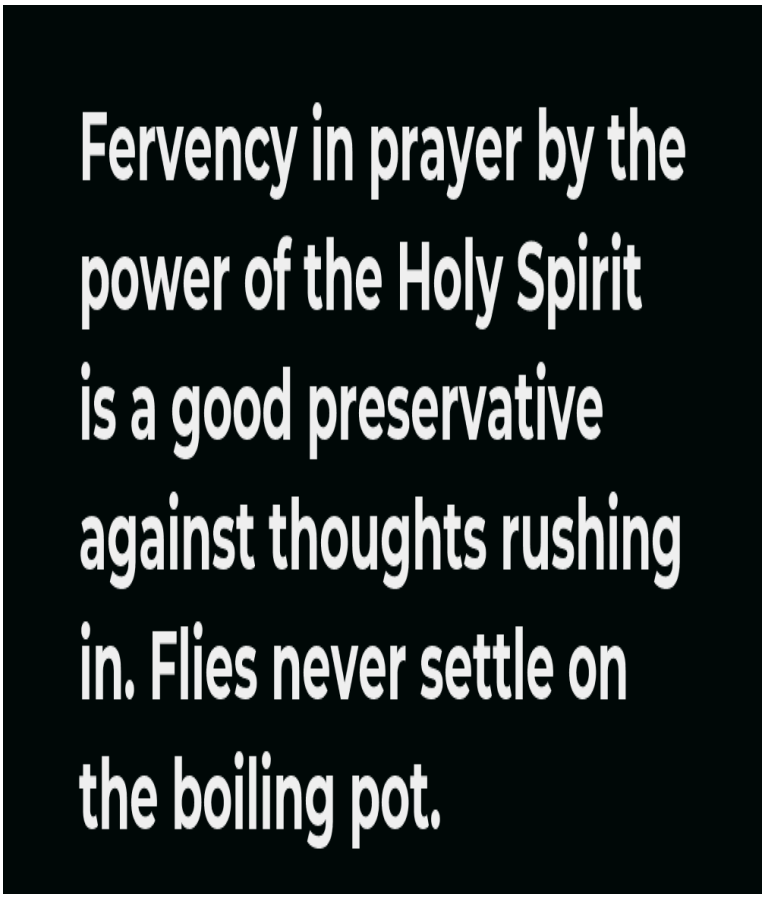

हमारी स्तुति और आराधना प्रभु के लिए मीठी सुगंध और खुशबू के समान होनी चाहिए। यह स्तुति हमारे दिलों से आनी चाहिए, न कि केवल हमारे होठों से। वचन कहता है, *'हमारा परमेश्वर एक पवित्र परमेश्वर है,'* इसलिए हमारा पवित्र परमेश्वर केवल ऐसे ही लोगों की स्तुति और आराधना को स्वीकार करेंगे। क्या आज हमारी स्तुति और आराधना वैसी ही है? क्या यह प्रभु के लिये शुद्ध है?

आइए आज हम अपने जीवन का परीक्षण करें। जब हम दूध उबालते हैं तो उसी गंदे बर्तन को दोबारा इस्तेमाल में नहीं लाते। उपयोग के बाद हम इसे धोकर साफ कर लेते हैं, नहीं तो पुराने गंदे बर्तन में उबालने पर नया दूध फट जाएगा। इसी तरह, हमें उनकी स्तुति और आराधना करने से पहले, हर दिन अपने दिल से अपने पापों को साफ करना चाहिए। यह हमारे पवित्र परमेश्वर को स्वीकार्य है, और वह हमारी स्तुति और आराधना के दौरान हमारे बीच में आएंगे। दाऊद कहता है, भजन संहिता 34:1 में ''(दाऊद का भजन, जब वह अबीमेलेक के सामने पागलदृसा बना, और अबीमेलेक ने उसे निकाल दिया, और वह चला गया) मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।'' दाऊद अपने जीवन के हर पल परमेश्वर के करीब रहना चाहता था, इसलिए वह अपने हृदय में लगातार परमेश्वर की स्तुति करता था। हम प्रभु को अपनी दौलत, सोना, या चाँदी से नहीं खरीद सकते; हमें अपने हृदयों में निरंतर परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने की आवश्यकता है। हमें प्रभु की स्तुति का शुद्ध पात्र बनना चाहिए। तब हमारे प्रभु हमसे दूर नहीं होंगे, बल्कि वह सदैव हमारे करीब ही रहेंगे।

भजन संहिता 147:1 ''याह की स्तुति करो। क्योंकि अपने परमेश्वर का भजन गाना अच्छा है; क्योंकि वह मनभावना है, उसकी स्तुति करनी मनभावनी है।'' हमें प्रभु की स्तुति का पात्र बनना चाहिए।

प्रभु का सन्दूक परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक वाचा थी। बाइबिल में न्यायियों/नबी एली के शासनकाल के अंत के दौरान, पलिश्तियों ने इस्राएलियों को हरा दिया और उनके बीच से प्रभु के सन्दूक को छीन लिया। वचन कहता है कि *"इस्राएल में से महिमा उठ गई है, क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया है।"* जब सन्दूक उनके बीच में था तो इस्राएलियों को हर पल अपने बीच प्रभु की उपस्थिति का एहसास होता था, लेकिन जब सन्दूक हटा दिया गया, तो प्रभु की महिमा भी उनके पास से चली गई। 1 शमूएल 4:22 ''फिर उसने कहा, "इस्राएल में से महिमा उठ गई है, क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया है।'' तब यहोवा का सन्दूक उन मूर्तिपूजकों के लिए दुःख और पीड़ा लेकर आया जो इसे ले गए। जब पलिश्तियों ने सन्दूक पर कब्ज़ा कर लिया, तो उन्होंने इसे अपने मंदिर में अन्य मूर्तियों के बीच रख दिया। यहोवा का सन्दूक पलिश्तियों के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ।

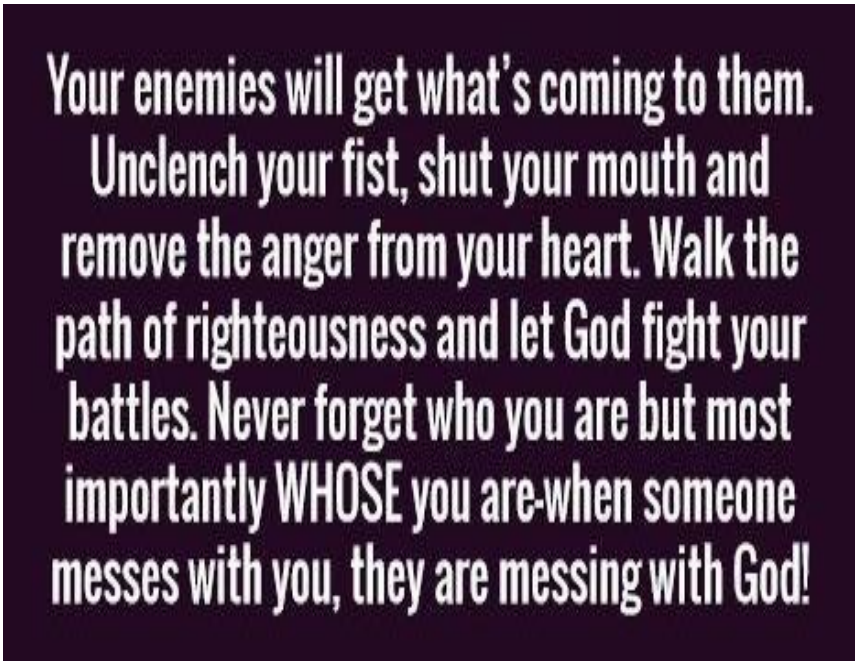

1 शमूएल 5:1–12 ''पलिश्तियों ने परमेश्वर का सन्दूक एबनेज़ेर से उठाकर अशदोद में पहुँचा दिया; फिर पलिश्तियों ने परमेश्वर के सन्दूक को उठाकर दागोन के मन्दिर में पहुँचाकर दागोन के पास रख दिया। दूसरे दिन अशदोदियों ने तड़के उठकर क्या देखा कि दागोन यहोवा के सन्दूक के सामने औंधे मुँह भूमि पर गिरा पड़ा है। तब उन्होंने दागोन को उठाकर उसी के स्थान पर फिर खड़ा किया। फिर अगले दिन जब वे तड़के उठे, तब क्या देखा कि दागोन यहोवा के सन्दूक के सामने औंधे मुँह भूमि पर गिर पड़ा है; और दागोन का सिर और दोनों हथेलियाँ डेवढ़ी पर कटी हुई पड़ी हैं; इस प्रकार दागोन का केवल धड़ समूचा रह गया। इस कारण आज के दिन तक भी दागोन के पुजारी और जितने दागोन के मन्दिर में जाते हैं, वे अशदोद में दागोन की डेवढ़ी पर पाँव नहीं रखते। तब यहोवा का हाथ अशदोदियों के ऊपर भारी पड़ा, और वह उन्हें नष्ट करने लगा; और उसने अशदोद और उसके आस पास के लोगों के गिलटियाँ निकालीं। यह हाल देखकर अशदोद के लोगों ने कहा, "इस्राएल के देवता का सन्दूक हमारे मध्य रहने नहीं पाएगा; क्योंकि उसका हाथ हम पर और हमारे देवता दागोन पर कठोरता के साथ पड़ा है।" तब उन्होंने पलिश्तियों के सब सरदारों को बुलवा भेजा, और उनसे पूछा, "हम इस्राएल के देवता के सन्दूक से क्या करें?" वे बोले, "इस्राएल के देवता का सन्दूक घुमाकर गत नगर में पहुँचाया जाय।" अतः उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर के सन्दूक को घुमाकर गत में पहुँचा दिया। जब वे उसको घुमाकर

वहाँ पहुँचे, तो यूँ हुआ कि यहोवा का हाथ उस नगर के विरुद्ध ऐसा उठा कि उस में अत्यन्त बड़ी हलचल मच गई; और उसने छोटे से बड़े तक उस नगर के सब लोगों को मारा, और उनके गिलटियाँ निकलने लगीं। तब उन्होंने परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन को भेजा। और ज्योंही परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन में पहुँचा त्योंही एक्रोनी यह कहकर चिल्लाने लगे, "इस्राएल के देवता का सन्दूक

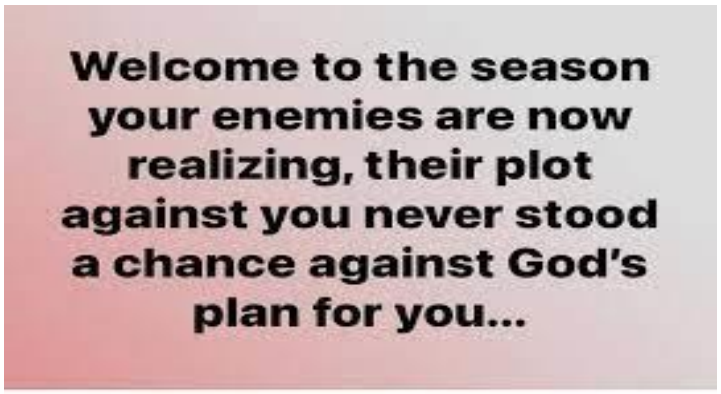

घुमाकर हमारे पास इसलिये पहुँचाया गया है कि हम और हमारे लोगों को मरवा डाले।" तब उन्होंने पलिश्तियों के सब सरदारों को इकट्ठा किया, और उनसे कहा, "इस्राएल के देवता के सन्दूक को निकाल दो, कि वह अपने स्थान पर लौट जाए, और हम को और हमारे लोगों को मार डालने न पाए।" उस समस्त नगर में तो मृत्यु के भय की हलचल मच रही थी, और परमेश्वर का हाथ वहाँ बहुत भारी पड़ा था। और जो मनुष्य न मरे वे भी गिलटियों के मारे पड़े रहे; और नगर की चिल्लाहट आकाश तक पहुँची।'' उपरोक्त पाठ में, हम देखते हैं कि जब प्रभु का सन्दूक इस्राएल से चला गया, तो प्रभु की महिमा उनके पास से चली गई, और जब पलिश्तियों ने प्रभु के सन्दूक को अपने मंदिर में रखा, तो रात में मंदिर में उनके बीच एक बड़ी लड़ाई हुई। मंदिर में सन्दूक और मूर्तियाँ, विभिन्न तरीकों से उनकी भूमि में महान विनाश लाती हैं। हमारा परमेश्वर एक प्रतापी परमेश्वर है, वह हमारे जीवन में अद्भुत कार्य कर सकते है। जब भी हम प्रभु को चोट पहुँचाते हैं, तो हम अपने जीवन में उनकी कृपा खो देते हैं और अपने जीवन में दंड को आमंत्रित करते हैं। आज, प्रभु के साथ हमारा रिश्ता पिता–बच्चे के रिश्ते जैसा है, और हमें अपने जीवन के मुख्य केंद्र के रूप में प्रभु परमेश्वर को हमेशा अपने साथ रखना चाहिए।

2 राजाओं 4:8–10 ''एक दिन की बात है कि एलीशा शूनेम को गया, जहाँ एक कुलीन स्त्री थी, और उसने उसे रोटी खाने के लिये विनती करके विवश किया। अतः जब जब वह उधर से जाता, तब तब वह वहाँ रोटी खाने को उतरता था। उस स्त्री ने अपने पति से कहा, "सुन यह जो बार बार हमारे यहाँ से होकर जाया करता है वह मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र भक्त जान पड़ता है। हम भीत पर एक छोटी उपरौठी कोठरी बनाएँ, और उसमें उसके लिये एक खाट, एक मेज, एक कुर्सी और एक दीवट रखें, कि जब जब वह हमारे यहाँ आए, तब तब उसी में टिका करे।'' अब भविष्यवक्ता एलीशा उस स्त्री के लिए कुछ करना चाहता था, इसलिए उसने अपने सेवक से पूछा कि वे इस शूनेमिन स्त्री की कैसे मदद कर सकता हैं। सेवक ने एलीशा को बताया कि हालाँकि वह बहुत सी चीज़ों से आशीषित है, फिर भी उसे कोई बच्चा नहीं है। इसलिए, एलीशा ने उसके लिए प्रार्थना की, और उसे एक पुत्र का आशीष मिला। एक दिन बेटा मर गया। भविष्यवक्ता एलीशा ने शुनेमिन स्त्री के मृत बेटे के लिए प्रार्थना की और उसे पुनर्जीवित

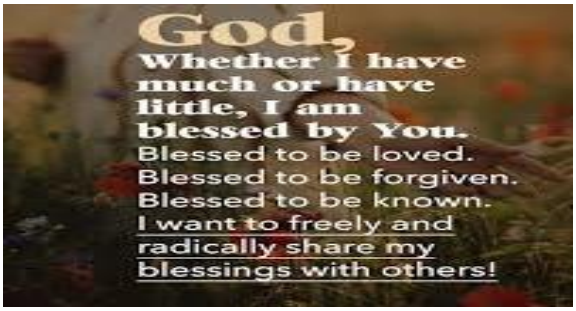

किया, जिससे वह फिर से जीवित हो गया। इसी तरह, अपने घरों में, जब हम प्रभु और उनके सेवकों को ऐसा स्थान देते हैं, तो प्रभु हमें हमारी समझ से परे, विभिन्न तरीकों से आशीष देते हैं। जब यहोवा का सन्दूक इस्राएलियों के पास था, तब वे धन्य थे, परन्तु जिस क्षण यहोवा का सन्दूक उन से छीन लिया गया, तब परमेश्वर की महिमा उनके पास से चली गई। हमें भी अपने घरों में प्रभु के साथ जुड़े रहना चाहिए, अपने जीवन में उनके अद्भुत और शक्तिशाली कार्यों को हमेशा याद रखना चाहिए। यदि हम उनके कार्यों के प्रति सम्मान रखेंगे तो प्रभु निश्चित रूप से हमें और हमारे परिवारों को आशीष देते रहेंगे। 1 इतिहास 13:14 ''और परमेश्वर का सन्दूक ओबेदेदोम के यहाँ उसके घराने के पास तीन महीने तक रहा, और यहोवा ने ओबेदेदोम के घराने पर और जो कुछ उसका था उस पर भी आशीष दी।'' प्रभु का सन्दूक इस्राएल में, ओबेदेदोम के प्रभु–भयभीत घर में लौटा दिया गया, और इस्राएलियों के जीवन में आशीष फिर से लौट आया।

यशायाह 43:2 ''जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग संग रहूँगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आँच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।'' प्रभु के साथ रहना एक आशीष है, वह एक महान परमेश्वर है, और उनके साथ जुड़े रहने से हमारे जीवन में हमेशा आशीष आएगा, जैसे प्रभु दानिय्येल और उसके दोस्तों, शद्रक, मेशक और अबेदनगो के साथ थे क्योंकि उन्होंने प्रभु को अपने करीब रखा था। वे अपने जीवन की हर स्थिति में उनके और उनके विश्वास के माध्यम से, बहुत से लोग प्रभु का भय मानते थे और उनमें विश्वास करते थे।

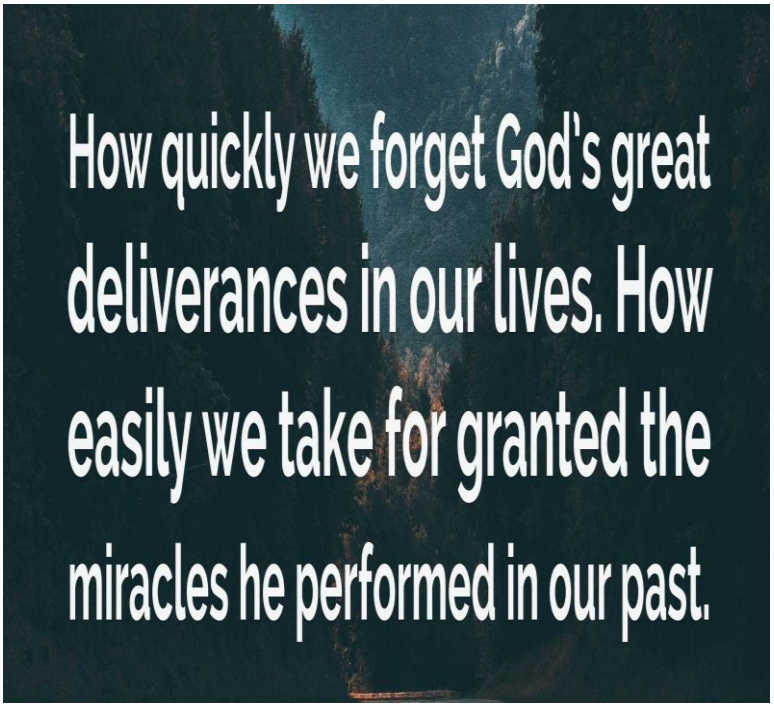

हमारा प्रभु आज भी वही है, वो नहीं बदला, बल्कि हम ही बदले हैं। हमने उनके प्रेम को देखा और अनुभव किया है, फिर भी हम उन आश्चर्य कार्यो को भूल गए हैं जो हमने अपने जीवन में देखे हैं। हमारा परमेश्वर वही अपरिवर्तनीय परमेश्वर है, और वह कभी नहीं बदलेंगे। क्योंकि हम उन्हें भूल गए हैं, आज हम अपने जीवन में दुःख और दर्द में डूब रहे हैं। विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ हमें डुबा देती हैं और हमें हमारे प्रभु परमेश्वर से और भी दूर ले जाती हैं। डर हमारे जीवन में एक बड़ी चिंता है। परन्तु जब परमेश्वर हमारे संग है, और हम जल में होकर चलते हैं, तो नदियां हम पर नहीं उमड़ेंगी, और न आग हमें भस्म करेगी। भजन संहिता 73:23 ''तौभी मैं निरन्तर तेरे संग ही था; तू ने मेरे दाहिने हाथ को पकड़ रखा।'' जब परमेश्वर हमारे साथ है, तो वह हमारा दाहिना हाथ पकड़ेंगे। हां, प्रभु हमारी देखभाल करते हैं और हमें अपने दाहिने हाथ से पकड़ते हैं। जब हम प्रभु के लोगों के बीच रहेंगे, तो हम धन्य रहेंगे और उनके साथ अपने जीवन का आनंद लेंगे।

हमने बाइबिल में शैतान से ग्रस्त एक व्यक्ति के बारे में एक कहानी पढ़ी है, जो एक बार इस बंधन से मुक्त होने के बाद, प्रभु की उपस्थिति में शांति से बैठा था। प्रभु से मिलने से पहले, वह उधमी था और उसे वश में नहीं किया जा सकता था, लेकिन प्रभु ने उसे बंधन से मुक्त करने के बाद, वह शांत और शांतिप्रिय था। लूका 8:38–39 ''जिस मनुष्य में से दुष्टात्माएँ निकली थीं वह उससे विनती करने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दे, परन्तु यीशु ने उसे विदा करके कहा, "अपने घर को लौट जा और लोगों से बता कि परमेश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े बड़े काम किए हैं।" वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े–बड़े काम किए।'' यह व्यक्ति, एक बार बंधन में था, पूरे शहर में दौड़ा और यह शुभ समाचार फैलाया कि यीशु ने उसके जीवन में क्या किया था। वह जानता था कि अपनी रिहाई तक उसने कितना कष्ट सहा था और खुद को कितना नुकसान पहुँचाया था। कल्पना कीजिए कि उसके जीवन में शैतान का कब्ज़ा होने का बोझ था। लेकिन एक बार जब उसे मुक्ति मिल गई, तो शांति उसके पास आई और उसन प्रभु के साथ रहने की इच्छा की। हममें से प्रत्येक को उन आश्चर्य कार्यो को भी याद रखना चाहिए जो प्रभु ने हमारे जीवन में किए हैं। हमें उनका कितना ऋणी होना चाहिए? हमें उनके बच्चों के बीच रहने और उनके साथ रहने की कितनी इच्छा होनी चाहिए? बंधन में फंसे व्यक्ति को बंधन से मुक्ति के मूल्य का एहसास हुआ, इसलिए वह प्रभु के साथ रहना चाहता था। यहाँ हम देखते हैं कि प्रभु यीशु ने इस व्यक्ति को बिना किसी योग्यता के अपनी सेवा करने के लिए बुलाया। उसने इस आदमी को बुलाया और उससे कहा, *'लोगों के बीच सुसमाचार फैलाओ।'* इस तरह इस धरती पर प्रभु की सेवा बढ़ती है।

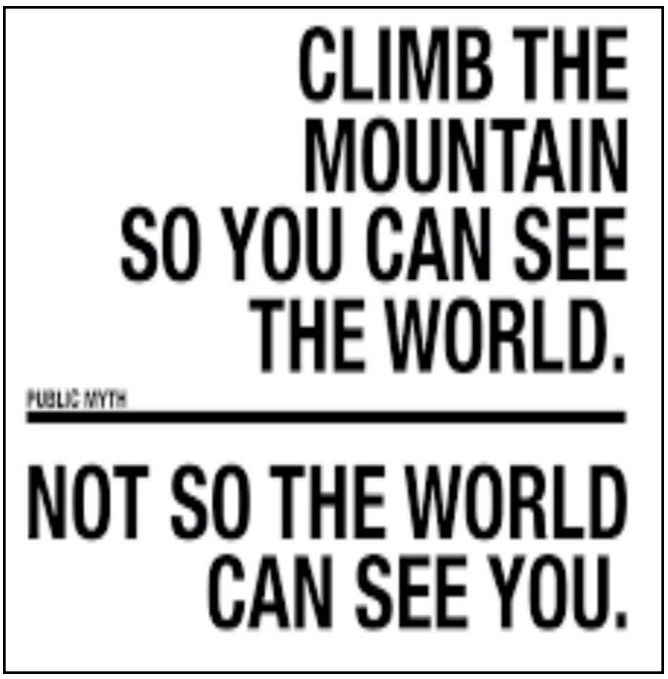

भजन संहिता 34:8 में वचन कहता है, ''परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है! क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उसकी शरण लेता है।'' परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है, और तुम धन्य हो जाओगे। प्रेरितों के काम 4:13 ''जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो आश्चर्य किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।'' पतरस और यहुन्ना ने प्रभु का स्वाद चखा था और प्रभु के रहस्योद्घाटन के बारे में बोलने का आत्मविश्वास प्राप्त किया था। लोगों ने अविश्वास के साथ सुना, क्योंकि उन्हें आश्चर्य हुआ कि कैसे मछुआरे और अशिक्षित लोग इस तरह के रहस्योद्घाटन के बारे में महान ज्ञान के साथ बात करते थे। हमें अपने आत्मारिक ज्ञान को नियंत्रण में रखना चाहिए और इसका अनावश्यक प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।

1 पतरस 5:8–9 ''सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं ऐसे ही दुःख सह रहे हैं।'' शैतान जानता है कि हम प्रभु की संतान हैं और प्रभु की कृपा हम पर है, इसलिए वह हमेशा हमसे क्रोधित रहता है।

यहोवा के सन्दूक द्वारा मूरतों के मन्दिर में किए गए विनाश को स्मरण करके वह आज भी हम पर क्रोधित है। प्रभु चाहते है कि हम आज भी सतर्क रहें, क्योंकि जिस क्षण हम प्रभु की कृपा और अपने चारों ओर उनकी पवित्र बाड़ को खो देंगे, शैतान हम पर झपटेगा और हमें टुकड़े–टुकड़े कर देगा। शेर अपने शिकार के अकेले या अलग होने का इंतजार करता है, फिर वह उसे मारने के लिए उस पर झपटता है। जब जानवर झुंड में होते हैं तो शेर हमला नहीं कर सकता, लेकिन जब अकेला या अलग हो जाता है, तो शेर अपने शिकार पर झपट पड़ता है। इसी प्रकार, प्रभु के सभी बच्चों को इकट्ठे रहना और एक साथ रहना सीखना चाहिए। हमें प्रभु के लिए सदैव सतर्क और सचेत रहना चाहिए। 1 पतरस 5:9 ''विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं ऐसे ही दुःख सह रहे हैं।'' हमें क्रूस को अपने साथ रखना चाहिए और हर समय प्रभु के लिए काम करने में प्रसन्न रहना चाहिए। जब प्रभु हमारे भीतर नहीं है, तो हम उनकी सुरक्षा खो देते हैं। शैतान यह अच्छी तरह से जानता है और तभी वह तुरंत हम पर झपटेगा।

जैसा कि दाऊद ने कहा, हमें अपना दाहिना हाथ परमेश्वर के हाथ में देना चाहिए, तब वह हमारा हाथ पकड़कर हमारे साथ चलेंगे और हमारे लिए मार्ग दिखाएंगे। याकूब 1:8–7 ''वह व्यक्ति दुचित्ता है और अपनी सारी बातों में चंचल है। ऐसा मनुष्य यह न समझे कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा,''

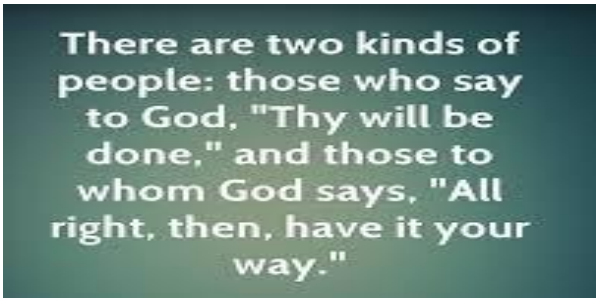

अपने जीवन में, हमें कभी भी दोहरे विचारों वाला नहीं होना चाहिए, प्रभु के लिए हमारे निर्णय दृढ़ता से उनके मार्ग पर आधारित होने चाहिए, जिसमें कोई दो रास्ते नहीं होने चाहिए। हमें बिना किसी संदेह के अपना दाहिना हाथ प्रभु के हाथ में सौंप देना चाहिए, तब हम निश्चिंत हो सकते हैं कि वह हमारे लिए सबसे अच्छे मार्गदर्शक होंगे। जब प्रभु का हाथ हम पर होता है, तो हमें आशीष की तलाश में जाने की जरूरत नहीं है, बल्कि आशीष हमें ढूंढते हुए आएगी। इतना ही नहीं, बल्कि परमेश्वर भी लगातार हमारे साथ रहेंगे और नदियों को हमारे ऊपर से बहने नहीं देंगे या आग हमें भस्म नहीं करेगी। जब परमेश्वर हमारे साथ होंगे, तो वह हमारी और हमारे परिवारों की देखभाल करेंगे, ठीक वैसे ही जब यहोवा का सन्दूक इस्राएलियों के बीच में था, और परमेश्वर की महिमा सदैव उनके साथ थी। इसलिए, हमें अपने जीवन में प्रभु की कृपा कभी नहीं खोनी चाहिए।

यह वचन सभी के लिए आशीष हो।

पास्टर सरोजा म।